भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 जनवरी 2010 अंक 1

मालवीयजी की हिन्दी निष्ठा

पण्डित मदनमोहन मालवीय स्वदेशी, स्वभाषा और अपने देश की वेश-भूषा के प्रति अनन्य निष्ठा रखते थे। विदेशी भाषा अंग्रेजी की जगह हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित किए जाने के लिए उन्होंने जीवन के अन्तिम क्षणों तक प्रयास किया। वह हिन्दी और संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा के भी अच्छे जानकार थे। इसके बावजूद वह हमेशा हिन्दी का ही उपयोग किया करते थे।

एक बार महामना को एक विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाषण देने के लिए आमन्त्रित किया गया। उन्होंने पहले ही बता दिया था कि वह अंग्रेजी की पद्धति से गाउन पहनकर अंग्रेजी में भाषण नहीं देंगे, बल्कि अपनी प्राचीन वेश-भूषा में ही आएँगे। जबकि उन दिनों दीक्षांत भाषण अंग्रेजी में देने की परिपाटी थी।

मालवीयजी ने जैसे ही हिन्दी में बोलना शुरू किया कि एक विद्यार्थी खड़ा होकर बोला, ''श्रीमान, मैं आपकी भाषा नहीं समझ पा रहा हूँ। यूनिवर्सिटी में तो अंग्रेजी में ही भाषण दिया जाना चाहिए।'' मालवीयजी उसकी बात सुनकर मुस्कराए और अंग्रेजी में कहा, ''मैं अंग्रेजी में भी अपनी बात रख सकता हूँ। किन्तु मैंने अपने देश की जनभाषा हिन्दी के प्रचार का संकल्प लिया है, उसका पालन करना मेरा धर्म है। यहाँ मौजूद छात्रों में से अधिकांश हिन्दी समझते हैं। अत: मैं हिन्दी में ही बोलूँगा।'' उनके शब्द सुनते ही प्राय: सभी छात्रों ने कहा, ''महाराज, हिन्दी में ही बोलिए, हम सब उसे ज्यादा सरलता से समझते हैं।''

''हाईटेक युग में भी किताबें ही हैं जो आदमी को ठहरने पर मजबूर करती हैं। प्रारम्भिक शिक्षा संसाधन और आधुनिक शिक्षा पद्धति के युग में पुस्तकों की महत्ता बढ़ती जा रही है। पुस्तकें ज्ञानचक्षु-द्वार खोलती हैं।''

जागो फिर एक बार!

नये वर्ष के अरुणाभ-सूर्य का स्वागत करते हुए आकाश में उड़ते विहग-वृंद ऋचा-गान कर रहे हैं। मलयानिल के झकोरों की चन्दन-सुवास से महक उठे हैं दिग्-दिगंत! हिमाच्छादित पर्वत-शिखरों से उतरतीं अमृत-वाहिनी सरिताएँ कलकल-नाद् करतीं बढ़ चलती हैं महासागर की ओर, और महासागर अपनी लहरों की विशाल-भुजाओं में सब-कुछ समेटकर, अपने अतल की सारी सम्पदा लेकर मन्द्र-स्वर में गर्जन करता, बढ़ चलता है उस परमसत्ता के चरणों में आत्म-समर्पण करने के लिए!

इस चित्र के दूसरी ओर नई सुबह की सूर्य-किरणों का स्पर्श पाकर भी हम सो रहे हैं। हमारी चेतना प्रगाढ़-निद्रा के अन्धकार में दु:स्वप्नों के बीच हिचकोले खा रही है। वर्ष-मास-पक्ष, दिवस-रात्रि गुज़रते जा रहे हैं और अचेतन-भाव से चल रहा है हमारा जीवन-क्रम—जन्म-जरा-मरण। इसके समान्तर झुनझुने बजाते हुए देश के कर्णधार और हमारे माई-बाऊ-सरकार 'शाइनिंग-इण्डिया' से लगायत 'राइजिंग-इण्डिया' तक के नारों की भूलभुलैया में हमें भटका रहे हैं और हम डूबे हुए हैं नींद की खुमारी में। × × ''जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें!''×× ! आखिर यह कैसी नींद है जो कि ज्योतिवृत्त के बीच भी नहीं टूटती, सूरज का ताप पाकर भी नहीं पिघलती ?

वस्तुत: सही मायनों में हमें गुलाम बनाने वाले गौरांग-महाप्रभु जानते थे कि अगर भारत पर राज करना है तो भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पूरी तरह नष्ट करना होगा और यह काम उन्होंने बखूबी किया। इसी सुविचारित योजना के तहत सन् 1835 में लॉर्ड मैकाले ने फोर्ट विलियम कॉलेज के माध्यम से अपनी शिक्षा-नीति लागू करने के बाद लन्दन-स्थित अपने परिजनों को पत्र लिखते हुए यह विश्वास व्यक्त किया कि अगर उसके द्वारा प्रचलित शिक्षा-पद्धति केवल पचास वर्ष भी कायम रह सकी तो भारत अगले पाँच-सौ वर्षों तक गुलाम बना रहेगा।

धन्य-धन्य लॉर्ड मैकाले! आप सचमुच महान भविष्य-द्रष्टा थे। यद्यपि आपकी पद्धति में ही शिक्षा लेकर हमने 90 साल तक (1857-1947 ई०) अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष किया और अन्त में आज़ादी हासिल भी की किन्तु आज़ाद होने के बाद राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति के अभाव में हम फिर आपके दिखलाये रास्ते पर ही बढ़ते चले जा रहे हैं। समृद्धि और विकास की चकाचौंध में हमने खो दी है अपनी भाषा और खो दिया है अपना दर्शन, चिन्तन, आत्म-गौरव। अब 90 साल क्या/900 साल तक भी हम चूँ नहीं करेंगे क्योंकि सचेतन-भाव से स्वीकृत मानसिक-गुलामी ही हमारी आज़ादी की खुशफहमी है। सचमुच आप महान थे 'माई लॉर्ड'!

सहज-स्वीकृत परतंत्रता के इसी परिदृश्य के खिलाफ 'वाङ्मय' ने शुरू से ही अपनी आवाज़ बुलन्द की है। भाषा-साहित्य, शिक्षा और संस्कृति के चौखटे में रहकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय दुरभि-सन्धियों की ओर संकेत किया है। अपने इसी दायित्व का

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

निर्वाह करते हुए हम आपको आमंत्रित करते हैं पुस्तकों के मौन-मुखर संसार में। आइये,चलें नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले 'विश्व पुस्तक मेला' (30 जनवरी - 7 फरवरी 2010) में। यहाँ आपका साक्षात्कार विश्व की विभिन्न भाषाओं और भारतीय भाषाओं में लिखे गये आधुनिकतम और प्राचीनतम साहित्य और साहित्यकारों से होगा। इसके अलावा विज्ञान और नवीनतम वैज्ञानिक आविष्कार, व्यापार-वाणिज्य, प्रबंधन, देश-विदेश का इतिहास-भूगोल, सभ्यता-संस्कृति, राजनीति-संविधान, पर्यावरण, व्यक्तित्व-निर्माण और विकास, जीवन की सफलता और सार्थकता के सूत्रों के साथ-साथ आपके बच्चों के लिए बाल-किशोर साहित्य, महिलाओं के लिए आज का स्त्री-विमर्श और उपयोगी साहित्य, बड़े-बुज़ुर्गों के लिए धर्म-अध्यात्म-दर्शन आदि सैकड़ों विषयों की हज़ारों पुस्तकें आपसे संवाद स्थापित करने के लिए आपको पुकार रही हैं। पुस्तकों के इस मौन-निमंत्रण में जागरण की भैरवी के स्वर गूँज रहे हैं। इन्हीं ध्वनित प्रतिध्वनियों के बीच विवेकानंद-अरविंद-तिलक के उद्बोधन हैं, गाँधी-सुभाष-नेहरू का संघर्ष है, प्रेमचंद-प्रसाद-निराला-दिनकर का युगान्तरकारी दस्तावेज़ है जो हमें आत्महीनता की दीर्घ-निद्रा से जगाने के लिए हमारी चेतना पर चोट दे रहे हैं, वैदिक-स्वरों में पुकार रहे हैं 'उत्तिष्ठत् जाग्रत!'

जगो कि तुम हज़ार साल सो चुके
जगो कि तुम हज़ार साल खो चुके!

सर्वेक्षण

● **कहाँ से चले थे हम :** और कहाँ आ गये हैं? देश की वर्तमान दुर्व्यवस्था को देख कर यही लगता है। किसानों की आत्महत्या के क्रम में महँगाई की मार से त्रस्त घर-घर के चूल्हे, आम-आदमी की भूख और कृषिमंत्री का अप्रासंगिक बयान; औद्योगीकरण और विकास के नाम पर पूरा मुआवज़ा दिये बिना खेतों का अधिग्रहण; पुनर्वास की व्यवस्था के बिना गरीब किसानों की बेदखली; वोट-बैंक के नाम पर मण्डल आयोग के बाद सच्चर कमेटी की रिपोर्ट; प्रादेशिक विखण्डन का सिलसिला; पश्चिमोत्तर और उत्तर-पूर्व के राज्यों की मानवीय समस्याएँ और सामरिक-स्थिति; कथित उदारीकरण के बाद अमीरी-गरीबी के बीच बढ़ती दूरियाँ; गरीबी, बेरोज़गारी और अश्लीलता की सीमाएँ लाँघता राजनयिक भ्रष्टाचार; क्या उस स्वप्न का प्रतिबिम्ब हैं जिसके लिए सत्याग्रह किये गये, क्रान्तिवीरों ने बलिदान दिये? वह दिन दूर नहीं जब नक्सली-हिंसा की लालरेखा के समानांतर बेहाल, बेरोज़गार, क्षुधित, अपमानित जनता का विक्षोभ फूटेगा, कदम-कदम पर विस्फोट होंगे और तार-तार हो जायेगा पूँजीपतियों, राजनेताओं का व्यक्तिपरक सुरक्षा-तंत्र। इसके पहले कि स्थितियाँ बद से बदतर हो जायें हमारी सरकारों को चाहिए कि वे गाँधी-सुभाष-नेहरू-लोहिया-अम्बेडकर जैसे समाज-चिन्तकों का पुनर्पाठ करें, अपनी नीतियों की समीक्षा करें और पारदर्शिता के साथ लोकमंगल की भावना से लोकपरक सामाजिक-मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए प्रतिबद्ध हों।

●● **फूलों का जन्मोत्सव :** हिमशिखरों के बीच मुस्कुराती फूलों की घाटी हो या राष्ट्रपति-भवन का खिलखिलाता मुगल-गार्डेन, फूलवालों की सैर हो या महामना मदनमोहन मालवीय की बगिया में खिलते फूलों की अदाकारी; दरअसल फूल जहाँ भी होते हैं अपने रूप-रंग-रस-गंध से सिर्फ भ्रमर-वृंद को ही नहीं हमें भी खींच लेते हैं, फूलों के सौरभ से पुलकित हो उठता है तन-मन। हमारे प्राचीन साहित्य में जहाँ किस्म-किस्म के फूलों की भरमार है, मधु-गुंजार है, मधु-ऋतु का संभार है वहीं फूलों की तरह मसृण-कोमल महाकवि कालिदास के 'शाकुन्तल' की शकुन्तला भी है। अचरज होता है कि यह सरल-हृदया वन-कन्या फूलों का जन्मोत्सव मनाती है। दुष्यंत से गांधर्व-विवाह के बाद बेटी शकुन्तला को विदा करते हुए पिता कण्व तपोवन के वृक्ष-विटपों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं—'हे वनदेवताओं! जो तुम्हें पानी पिलाये बिना (सींचे बिना) स्वयं पानी भी नहीं पीती थी, शृंगार-प्रिय होकर भी सहज-स्नेह के कारण तुम्हारी शाखाओं से कभी पुष्प-पल्लव नहीं तोड़ती थी, तुम्हारे वृंतों पर पुष्पोद्भव के समय जो फूलों का जन्मोत्सव मनाती थी वह शकुन्तला आज तुमसे विदा ले रही है, पति के घर जाती हुई अपनी बेटी को अनुज्ञा प्रदान करो।' और कवि की संवेदना में ही सही, सचमुच सिसक उठता है समूचा जंगल-तपोवन, आर्द्र-कंठ से गूँजता है आशीर्वाद—''रम्यान्तर: कमलिनी हरितैः सरोभिः......!''

और इसी क्रम में वर्तमान सन्दर्भों के धूम्रावरण के बीच वैश्वक-काव्य-संवेदना की आर्द्रता को जलाकर रियो-डि-जेनेरियो के बाद अभी-अभी कोपेनहेगेन में विकसित और विकासशील देशों ने समग्र प्राकृतिक पर्यावरण को लेकर जो पंचायत की उसका नतीजा अखबारों की सुर्खियों में रहा। कुछ संवेदनशील लोग अपना विरोध व्यक्त करते हुए 'ग्लोब' की अरथी लेकर चुपचाप राजधानी दिल्ली की सड़क पर आ गये। यह एक मार्मिक दृश्य था। आम-आदमी की सहज अभिव्यक्ति के अश्रुजल से क्या सत्ता-प्रतिष्ठानों के कठोर-पाषाण पिघल सकेंगे? पता नहीं! किन्तु आइये, संकल्प लें कि जब तक साँस में साँस है हम धरती, प्रकृति और फूलों को बचाने की मुहिम चलाते रहेंगे; न जंगलों को कटने देंगे, न नदियों को सूखने देंगे। ताकि—

हमीं नहीं
हमारे बच्चों के बच्चे भी जान सकें/कि—
कैसी होती है फूलों की सुरभि
चाँद की चाँदनी
गुनगुनी-धूप/और कैसी होती है
माँ की गोद!

—परागकुमार मोदी

साहित्य की ओर लौटता सिनेमा

—हरि मृदुल

थोड़े अचरज की बात है, लेकिन गौर करने लायक है कि एक बार फिर सिनेमा साहित्य की ओर देख रहा है। आश्चर्य इसलिए कि जब साहित्य की आम लोगों से दूरी लगातार बढ़ रही हो, तब साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने की बात सोचना आत्मघाती कदम से कम नहीं। लेकिन दृश्य इसके एकदम उलट है। इधर आधा दर्जन फिल्में साहित्यिक कृतियों पर बन रही हैं या बनकर खासी प्रशंसा बटोर चुकी हैं। पिछले दिनों रिलीज हुई फिल्म *3 इडियट्स* अंग्रेजी के लोकप्रिय लेखक चेतन भगत के उपन्यास *फाइव पॉइंट समवन* पर आधारित है। तो हिन्दी के मशहूर व्यंग्यकार शरद जोशी के व्यंग्य *तुम कब जाओगे अतिथि* पर एक बड़े बजट की फिल्म बननी शुरू हो गई है।

3 इडियट्स में आमिर खान और करीना कूपर जैसे मेगा स्टारों की जोड़ी है, तो *तुम कब जाओगे अतिथि* में अजय देवगन, कोंकणा सेन शर्मा जैसे नामचीन कलाकार हैं। शेक्सपियर के नाटकों *मैकबेथ और ओथेलो* पर *मकबूल* और *ओमकारा* जैसी फिल्में बनाने वाले विशाल भारद्वाज भी जल्दी ही रस्किन बांड की एक मशहूर कहानी पर फिल्म शुरू करनेवाले हैं। वह इससे पहले भी रस्किन बांड के बाल उपन्यास *ब्लू अंब्रेला* पर इसी नाम की एक अच्छी फिल्म बना चुके हैं। कुछ महीने पहले ही हिन्दी के दो चर्चित साहित्यकारों उदय प्रकाश और प्रियंवद की कहानियों पर निर्मित *मोहनदास* और *खरगोश* जैसी संवेदनशील फिल्में न केवल प्रशंसा पा चुकी हैं, बल्कि कई प्रतिष्ठित फिल्म समारोहों में राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी बटोर चुकी हैं। साहित्यिक कृतियों पर फिल्में बनती रही हैं। फिल्म इंडस्ट्री को उसके शुरुआती दिनों में साहित्य ने भरपूर सहारा दिया। प्रेमचंद, राजेन्द्र सिंह बेदी, मंटो, ख्वाजा अहमद अब्बास, भगवती चरण वर्मा, गोपाल सिंह नेपाली, फणीश्वरनाथ रेणु, शैलेन्द्र, नरेन्द्र शर्मा, सरस्वती कुमार दीपक और साहिर लुधियानवी जैसे हिन्दी-उर्दू के मशहूर लेखक फिल्मों से जुड़े। यह अलग बात है कि इनमें से कुछ ही लेखक अपने पाँव मायानगरी की रपटीली जमीन पर जमा पाए। ज्यादातर साहित्यकार फिल्म लेखन में इसलिए नहीं रम पाए, क्योंकि वे गाँव-देहात की पृष्ठभूमि के थे। चमक दमक से उन्हें असहजता महसूस होने लगी थी। इसके बावजूद बड़े साहित्यकारों की कृतियों पर फिल्म बनाने का सिलसिला निर्बाध गति से जारी रहा। प्रेमचंद, रेणु, शरत्चंद्र, रवींद्रनाथ टैगोर, बंकिमचंद्र, राजेंद्र सिंह बेदी, विमल मित्र, आर०के नारायण, रस्किन बांड, अनीता देसाई, मन्नू भंडारी, महाश्वेता देवी, विजयदान देथा, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, यू.आर. अनंतमूर्ति, विजय तेंदुलकर, शैवाल, शिवमूर्ति जैसे साहित्यकारों की रचनाओं पर बीसियों सफल फिल्में बनीं और इन्होंने भारतीय सिनेमा पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। इनमें *गोदान, सद्गति, शतरंज के खिलाड़ी, आनंद मठ, देवदास, परिणीता, साहब बीबी और गुलाम, एक चादर मैली सी, उमराव जान, सरस्वती चंद्र, रजनीगंधा, दीक्षा, हजार चौरासी की मां, रुदाली, आषाढ़ का एक दिन, तीसरी कसम, बंदिनी, गाइड, काबुलीवाला, मिलन, गीत गाता चल, दुविधा, सारा आकाश, अठारह सूरज के पौधे, माया दर्पण, सूरज का सातवां घोड़ा, जुनून, दामुल* और *तिरिया चरित्तर* जैसी फिल्मों का नाम लिया जा सकता है।

इधर एक बड़ा परिवर्तन यह आया है कि बड़े बैनरों ने साहित्यिक कृतियों पर विश्वास करना शुरू कर दिया है। अमूमन हिट मसालों वाली हंगामाखेज फिल्मों केपीछे भागने वाले बड़े निर्माताओं और स्टारों की समझ में आ गया है कि अब बॉक्स ऑफिस का मिजाज बदल चुका है। दर्शक इतने जागरूक हो चुके हैं कि उन्हें पाँच विदेशी लोकेशनों पर फिल्माए गानों, चार मारधाड़ सीन, तीन रोने-धोने के दृश्य, दो आइटम सांग और एक बलात्कार से नहीं ललचाया जा सकता। ऐसे में संवेदनशील कहानी वाली स्क्रिप्ट से ही बात बन सकती है। हॉलीवुड की फिल्मों की फ्रेम दर फ्रेम फूहड़ नकल से भी काम नहीं बनने वाला, क्योंकि अब दर्शक हॉलीवुड की फिल्में भी उतनी ही रुचिपूर्वक देखते हैं।

चूँकि सिनेमा भी ग्लोबल आकार ले चुका है, इसलिए बॉलीवुड की फिल्मों पर भी अब विदेशी निर्माण कम्पनियों की नजर रहती है। अगर उनकी फिल्मों की चोरी होती है, तो वह आसानी से पकड़ में आ जाती है। ज्यादा समय नहीं गुजरा, जब बॉलीवुड के नामचीन निर्माता इंद्रकुमार को फिल्म *डैडी कूल* के लिए एक हॉलीवुड कम्पनी को दो करोड़ रुपये देने पड़े, क्योंकि उनकी फिल्म हॉलीवुड की *डेथ एट ए फ्युनरल* की विशुद्ध नकल थी। इसी तरह की दिक्कत बी०आर० फिल्म्स को भी आ रही है। इस बैनर की जल्द रिलीज होने वाली फिल्म *बंदा ये बिंदास है* पर एक हॉलीवुड निर्माता ने आरोप लगाया है कि यह उसकी एक हिट फिल्म पर आधारित है। ऐसे में, बॉलीवुड में अब मौलिक कहानियों और स्क्रिप्ट की आवश्यकता पड़ने लगी है। फिल्म निर्माताओं को महसूस होने लगा है कि हॉलीवुड की फिल्म कम्पनियों को भारी रकम देकर उनकी फिल्मों के रीमेक अधिकार खरीदने से बेहतर है कि अपने देश की विभिन्न साहित्यिक कृतियों को खंगाला जाए। यह सच भी है कि भारतीय साहित्य में ऐसी कृतियों की कोई कमी नहीं है, जिन पर रोचक फिल्म आसानी से न बनाई जा सके।

(*अमर उजाला से साभार*)

आत्महत्या से रोकती कहानी

कहानी सम्राट मुंशी प्रेमचंद अपने कमरे में बैठे लिखने में व्यस्त थे। अचानक एक व्यक्ति उनके कमरे में पहुँचा और उनके पैरों में गिरकर रोने लगा। मुंशीजी ने उसे उठाया और आत्मीय भाव से पास में बैठाया। उन्होंने पूछा—''पैरों में गिरकर क्यों रो रहे हो? मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ।''

वह बोला ''मैं व्यापारी हूँ। व्यापार में लगातार घाटा आते रहने से कर्जदार हो गया था। रोटी के लाले पड़ गये। जीवन से इतना निराश हुआ कि आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया। अचानक, एक दिन पत्रिका में आपकी लिखी कहानी 'प्रेरणा' पढ़ी। उस कहानी ने मुझमें आत्मविश्वास जगा दिया। आत्महत्या का विचार त्याग दिया। पुन: विवेक के साथ उत्साह से व्यापार में जुट गया। कुछ ही दिनों में व्यापार चल निकला और मैं फिर से लखपति बन गया।'' व्यापारी कुछ क्षण रुककर बोला, ''मैं आज आपकी कहानी की प्रेरणा के कारण ही यहाँ जीवित दिख रहा हूँ''। मुंशी प्रेमचंद सहजता से मुसकुराए और बोले आज मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मेरा लेखन सार्थक हो गया।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

सौ साल पुरानी सोने की गीता

सौ साल पुरानी सोने के काम से भरपूर नन्हीं गीता अब इलाहाबाद संग्रहालय की थाती बन गयी है। 5 गुणे 3 इंच की पाकेट में रखने लायक यह पाण्डुलिपि करीब 200 पृष्ठों की सचित्र है। करीब 32 चित्र हैं जिन्हें विभिन्न प्रसंगों के अनुसार उकेरा गया है। इन चित्रों में सोने (स्वर्ण) के बार्डर हैं। पात्रों के आभूषणों और कसीदाकारी में सोने का प्रयोग किया गया है। इलाहाबाद संग्रहालय में इस पाण्डुलिपि को कुछ माह पहले ही शामिल किया है। संस्कृत में लिखी श्रीमद्‌भगवद्‌गीता की पाण्डुलिपि में गीता है, विष्णु सहस्रनाम है, भीष्म स्तवराज हैं और नारद विष्णु संवाद भी है।

तेजी बच्चन की सुन्दरता का बखान सुन ऐश्वर्य थीं दंग

ऐश्वर्य राय विश्व सुन्दरी खिताब विजेता रही हैं। लेकिन साहित्यकार पुष्पा भारती ने जब उनकी दादी सास तेजी बच्चन की सुन्दरता की शान में कसीदे पढ़ने शुरू किए तो ऐश्वर्य का मुँह खुला का खुला रह गया। यह शाम थी स्वर्गीय हरिवंशराय बच्चन की 102वीं जयंती की। पूरा बच्चन परिवार इस अवसर पर मुंबई के भारतीय विद्या भवन सभागार में उनकी कविताओं का पाठ करने के लिए इकट्ठा था। कई जानी-मानी हस्तियाँ श्रोता के रूप में मौजूद थीं। कभी अमिताभ बच्चन अकेले ही पिता हरिवंश राय बच्चन का लिखा लोकगीत संगीत की तान पर गा रहे थे, तो कभी पत्नी जया बच्चन के साथ किसी युगल गीत का पाठ कर रहे थे। एक अवसर तो ऐसा भी आया कि अमिताभ, अभिषेक, ऐश्वर्य, श्वेता एवं अजिताभ की छोटी बेटी ने बारी-बारी से अपने दादाजी की कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन कर रहीं स्व० धर्मवीर भारती की पत्नी पुष्पा भारती ने हरिवंश राय बच्चन एवं तेजी बच्चन की 1941 में हुई पहली मुलाकात एवं उसके बाद तेजी बच्चन की सुन्दरता से जुड़े अनेक किस्से सुनाए।

चकिया में रचा जा रहा है भोजपुरी का व्याकरण

चंदौली जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में लोकभाषा भोजपुरी के व्याकरण की रचना की जा रही है। इस श्रमसाध्य कार्य को करने में क्षेत्र के लोककवि और रिटायर्ड शिक्षक रामकिशोर शर्मा 'बेहद' जुटे हुए हैं। दिरेहूँ के गंवई परिवेश में भोजपुरी के व्याकरण की रचना में निमग्न श्री बेहद भोजपुरी के व्याकरण के साथ ही शब्दकोष भी तैयार कर रहे हैं।

पाठकों के पत्र

आप द्वारा लगातार 'भारतीय वाङ्मय' का प्रकाशन। स्व० मोदीजी के न रहने के बाद भी वही तत्परता, वही निष्ठा, वही उदारता।

नवम्बर 2009 का सम्पादकीय 'प्रेम पंथ दुर्गम अति' तथा बाद का 'सर्वेक्षण' बहुत पसन्द आया। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जो अफरा-तफरी है उसके पीछे शार्ट-कट संस्कृति ही जिम्मेदार है। 'माताल उत्सव' (उन्मत्त नशेड़ियों का जलसा) सर्वत्र की यही व्यथा-कथा है। गोदौलिया वाराणसी ही नहीं, गोरखपुर हो या कोई अन्य जगह, गणेश उत्सव, दुर्गा उत्सव या लक्ष्मी उत्सव हो किसी भी उत्सव में आस्था एवं भक्ति आजकल शायद ही देखने को मिलती है।

लीलाधर जगूड़ी का लेख 'हिन्दी को बाजारू मत बनाइये' ने गहरे तक प्रभावित किया। कम पृष्ठों में इतनी सारी सूचनाएँ 'भारतीय वाङ्मय' के अतिरिक्त हिन्दी की अन्यत्र पत्रिका में कहीं भी देखने में नहीं आतीं। इसके आधार में स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी का सर्वोत्तम समर्पण था। 'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका एक प्रकार से भारतीयता का भाव भी पैदा करती है। लोगों के हृदय में हिन्दी के प्रति आपकी समग्र निष्ठा हिन्दी को सतत दृढ़ आधार भी दे रही है। कह सकता हूँ—

निज भाषा प्रति नहीं समर्पण, देश बने कमजोर।
अंग्रेजी से कहाँ प्रतिष्ठा, जाओ कोई ओर॥
स्वागत करिए हिन्दी का, जो अपनी बोली भाषा।
उसी में सारी उन्नति है, उसमें प्रगति की आशा॥

—**शशि बिन्दु नारायण मिश्र,** गोरखपुर

आपके कुशल सम्पादन में 'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर-2009 अंक प्राप्त हुआ। इस अंक की सम्पादकीय से आपने विश्व पुस्तक मेले के सरोकारों को रेखांकित किया है तथा क्षेत्रवाद की विभीषिका एवं राष्ट्रगीत की राजनीति पर जो चिंता व्यक्त की है वह सराहनीय है। प्रो० लोढ़ाजी पर स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी का आलेख इस अंक की अन्यतम उपलब्धि है। प्रो० हरमेन्द्र सिंह बेदी एवं प्रो० अभिराज मिश्र के लेख पठनीय एवं मननीय हैं। लेखकद्वय को बधाई। अन्य नियमित स्तम्भ सूचनापरक तो हैं ही साहित्यिक गतिविधियों का जीवन्त झरोखा भी हैं।

—**डॉ० हरिसिंह पाल,** नई दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' का दिसम्बर 2009 का अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शिक्षा-संस्कृति, भाषा और साहित्य सम्बन्धी आकलन पर विशेष बल देते हुए भारत में उन्मुक्त पूँजीवादी बाजार-संरचना पर भी चर्चा की गई है। शैक्षणिक सुधार की तीव्र प्रक्रिया, विदेशी विश्वविद्यालयों के आगमन का मार्ग प्रशस्त होना, प्रसारण-मीडिया और पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में भी विदेशी मीडिया-समूहों और प्रकाशकों के लिए भी भारतीय बाजार के खुलने की सूचना निश्चय ही समसामयिकताबोध का प्रस्तुतीकरण एवं जीवन्त दस्तावेज है। शैक्षणिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक संगठनों की पहल अपेक्षित है। हिन्दी केवल भाषा नहीं बल्कि वैश्विक-परिदृश्य की अभिव्यक्ति है। साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों एवं सरोकारों की संवाहिका यह पत्रिका अपने गंतव्य की ओर निरन्तर बढ़ रही है।

—**डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय,** शिवपुरी, अलीगढ़

केन्द्रीय हिन्दी समिति का पुनर्गठन

20 नवम्बर को केन्द्र सरकार ने हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए केन्द्रीय हिन्दी समिति का पुनर्गठन कर दिया। इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह होंगे। यह समिति सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के सम्बन्ध में विभिन्न मंत्रालयों और विभागों की ओर से कार्यान्वित किए जा रहे कार्यों और कार्यक्रमों का समन्वय करेगी। 41 सदस्यीय इस समिति के उपाध्यक्ष गृह मंत्री श्री पी० चिदम्बरम हैं, जबकि मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल, सूचना और प्रसारण मंत्री श्रीमती अंबिका सोनी, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री ए० राजा, रेल मंत्री सुश्री ममता बनर्जी, विदेश मंत्री श्री एस०एम० कृष्णा, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, केरल के मुख्यमंत्री श्री वी०एस० अच्युतानंदन समिति के सदस्यों में नामित हैं। इसके अलावा वरिष्ठ साहित्यकारों और पत्रकारों को भी समिति में स्थान दिया गया है। इनमें सर्वश्री केदारनाथ सिंह, हिमांशु जोशी, महीप सिंह, गोपाल चतुर्वेदी, मधुकर उपाध्याय सुरेन्द्र शर्मा और नंदकिशोर आचार्य प्रमुख हैं।

डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' मानद प्रोफेसर बने

भोजपुरी-हिन्दी के जाने-माने कवि, आलोचक, चिंतक तथा हिन्दी अकादमी, दिल्ली व मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली के सचिव डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' को स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ ने अपने 'हिन्दी व भारतीय संस्कृति' विभाग का मानद प्रोफेसर नियुक्त किया है। प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव 'परिचय दास' की भोजपुरी-हिन्दी की दस से ऊपर कविता पुस्तकें हैं। उन्होंने लोक नाट्य परम्परा पर दो खण्डों में पुस्तक लिखी है।

19 वाँ, नई दिल्ली

❑ (शनिवार, 30 जनवरी से रविवार, 7 फरवरी 2010) ❑

विश्व पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, नई दिल्ली

पुस्तकों के इस वैश्विक समारोह में हमारे स्टाल पर आप सादर आमन्त्रित हैं।

आध्यात्मिक	■ स्वामी विशुद्धानन्द ■ पं० गोपीनाथ कविराज ■ भार्गव शिवरामकिंकर योगत्रयानन्द ■ करपात्रीजी ■ स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■ श्यामाचरण लाहिड़ी ■ विश्वनाथ मुखर्जी ■ स्वामी कृष्णानन्दजी 'महाराज' ■ भरत झुनझुनवाला ■ अरुणकुमार शर्मा **तथा** *अन्य......*
इतिहास, कला और संस्कृति ग्रन्थ	■ प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर ■ डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ■ डॉ० लल्लनजी गोपाल ■ जेम्स प्रिंसेप ■ डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ■ डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल ■ डॉ० मारुतिनन्दनप्रसाद तिवारी ■ डॉ० मोतीचन्द्र ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ प्रो० राजबली पाण्डेय ■ हृदयनारायण दीक्षित ■ डॉ० डेविड फ्राली **तथा** *अन्य..*
शिक्षा तथा मनोविज्ञान विषयक	■ डॉ० के०पी० पाण्डेय ■ आर०आर० रस्क ■ डॉ० प्रवीणचन्द्र श्रीवास्तव **तथा** *अन्य......*
साहित्य-समीक्षा ग्रन्थ	■ डॉ० भगीरथ मिश्र ■ डॉ० रामचन्द्र तिवारी ■ डॉ० बच्चन सिंह ■ डॉ० शुकदेव सिंह ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ■ प्रो० त्रिभुवन सिंह ■ डॉ० कन्हैया सिंह ■ प्रो० कल्याणमल लोढ़ा **तथा** *अन्य......*
कथा-कहानी-संस्मरण साहित्य	■ प्रेमचंद ■ द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' ■ बिमल मित्र ■ बच्चन सिंह ■ विवेकी राय ■ युगेश्वर ■ कुबेरनाथ राय ■ प्रभुदयाल मिश्र ■ कान्तिकुमार जैन ■ बाबूराम त्रिपाठी ■ नीहारिका **तथा** *अन्य......*
संस्कृत साहित्य	■ डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ■ डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ■ पं० चण्डिकाप्रसाद शुक्ल ■ पं० बलदेव उपाध्याय ■ डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी ■ प्रो० राजेन्द्र मिश्र ■ प्रो० वी० राघवन् **तथा** *अन्य......*
अन्य विषय	■ समाजशात्र, धर्म तथा दर्शन ■ पत्रकारिता ■ सङ्गीत ■ भाषण तथा संवाद विज्ञान ■ व्याकरण, भाषा और कोश ■ लोक-साहित्य/भोजपुरी साहित्य ■ संत-साहित्य ■ कबीर-साहित्य ■ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा ■ प्रेमचंद-साहित्य ■ प्रसाद-साहित्य ■ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ■ उपन्यास ■ कहानी ■ कविता ■ नाटक, एकांकी ■ हास्य-व्यंग्य ■ संस्मरण, जीवनचरित यात्रा तथा डायरी ■ मनीषी, संत महात्मा ■ अध्यात्म, योग, तंत्र, साहित्य/जीवन दर्शन ■ योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व ■ ज्योतिष ■ बाल साहित्य *आदि...।*

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

विश्वविद्यालय प्रकाशन की अनोखी प्रस्तुति

हिन्दी कथा–साहित्य की 'प्रेम–परक शैली' के सबसे बड़े कथा–शिल्पी, प्रख्यात कथाकार

द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की सम्पूर्ण रचनाओं का अनूठा संग्रह...

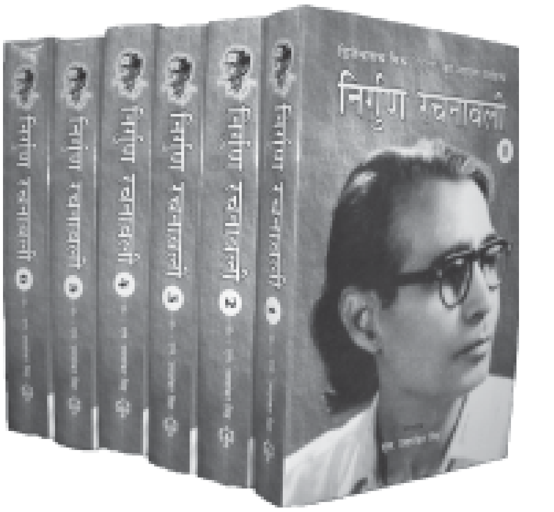

निर्गुण रचनावली

(छः खण्डों में)

सम्पादक

एल. उमाशंकर सिंह

मूल्य - सजिल्द : रू० 3000/-मात्र, अजिल्द : रू० 1800/-मात्र

खण्ड–1 : **उपन्यास तथा कहानियाँ,** खण्ड–2 : **कहानियाँ,** खण्ड–3 : **कहानियाँ,** खण्ड–4 : **कहानियाँ,** खण्ड–5 : **कहानियाँ,** खण्ड–6 : **कविताएँ / गीत / लेख /संस्मरण / साक्षात्कार / पत्र / चित्र व परिशिष्ट**

- शुरुआती दौर में निर्गुण की दु:खान्त कहानियों को पढ़कर पाठक अन्दर से तिल–मिलाकर रह जाते थे। नीलकण्ठ तो एक शिव ही थे पर उस आदर्श की ओर उन्मुख होने वालों में निर्गुण अग्रणी हैं। उनकी कहानियाँ कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। **—आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी**
- जो अकिंचनता की सीमा तक शालीन, उदात्त है, जिसका प्यार, स्नेह करुणा में सराबोर है, जिसकी कुण्ठा अपनी निजी है, जो आडम्बरहीन संकोची, प्रदर्शन से दूर और दम्भहीन है उसी का नाम द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' है। निर्गुणजी की रचनाएँ पढ़ते समय हमें शरत् और प्रेमचंद की एक साथ याद आती है। **—विष्णु प्रभाकर**
- निर्गुणजी पर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप है और इतनी गहरी है कि बिखरते–बिखरते भी उन्हें समेट लेती है। उनका लेखन समग्र लेखन बन जाता है, जिसकी हवा ही कुछ और होती है। वे कहीं अति का छोर नहीं छूते हैं, और शिल्प की ऐसी धार आगे कर चलते हैं कि घोर आधुनिकतावादी भी और कुछ नहीं सोच सकता। **—डॉ० विवेकी राय**
- जब तक हिन्दी में निर्गुणजी जैसे कहानीकार कहानी लिख रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेमचंद के बाद हिन्दी में उच्चकोटि की कहानी का लिखना बन्द हो गया। इनको हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार के समक्ष रख सकते हैं। निर्गुण जैसे कलाकार के होते हुए अन्य भाषाओं के कहानीकारों की ओर हमें दौड़ने की क्या जरूरत है? **—रामधारी सिंह 'दिनकर'**
- प्रेमचंद की कहानियों की तटस्थता, सूक्ष्म–दृष्टि, सरलता, सुबोधता के सूत्र निर्गुण की कहानियों में सहज ही प्राप्त हैं। रचना–शिल्प की अकृत्रिमता और स्वाभाविकता मन को मोह लेती है। **—डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल**
- वे उस पुरानी परिपाटी के कथाकार हैं जिनमें चमत्कार कम पर वास्तविक सत्य अधिक होता है। उनका जीवन का अनुभव बड़ा है, इसलिए उनकी कहानियों में वैचित्र्य और विभिन्नता है, रस है, बल है। **—श्रीपत राय**
- निर्गुण ने केवल कथा की गीली मिट्टी को कुशल करों का स्पर्श दिया। **—गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव**

सम्मान-पुरस्कार

'अबुल कलाम आजाद पुरस्कार' मतीन को

लखनऊ। उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने उर्दू भाषा में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिए जाने वाले 2009-10 के पुरस्कारों की घोषणा विगत 8 दिसम्बर को की। हैदराबाद के विख्यात कहानीकार **इकबाल मतीन** को 'मौलाना अबुल कलाम आजाद पुरस्कार' के लिए चयनित किया गया है। इसके साथ ही उर्दू अकादमी के वार्षिक अनुदान को 40 लाख से बढ़ाकर तीन करोड़ 28 लाख रुपये कर दिया गया है।

अकादमी की सचिव तरन्नुम अकील ने जानकारी दी कि मुख्य पुरस्कार की राशि बढ़ाकर *पाँच लाख रुपये* कर दी गई है। उर्दू अकादमी पुरस्कारों में 'अमीर खुसरो पुरस्कार' **बेकल उत्साही** को, 'मजमुई अदबी खिदमात पुरस्कार' लखनऊ की **मसरूह जहाँ** और **इसहाक सिद्दीकी** के साथ ही **हनीफ तरीन** (संभल), **साजिदा जैदी** (अलीगढ़), **फजल हसनैन** (इलाहाबाद) को और 'प्रेमचंद पुरस्कार' मुजफ्फरनगर के **प्रदीप जैन** को देने की घोषणा की गई है। 'उर्दू पत्रकारिता में विशेष योगदान' के लिए लखनऊ के **अख्तर यूनुस किदवई** और **शफाअत अली** को चुना गया है। 'मीडिया पुरस्कार' लखनऊ के ही **तारिक कमर** को दिया जाएगा। वहीं 'किताबत पुरस्कार' **रियाज अहमद** (इलाहाबाद) को देने का निर्णय लिया गया है।

अखिल भारतीय विद्वत परिषद सम्मान

वाराणसी। इस देश की मुख्य पहचान गीता-गायत्री-गंगा व गो से ही है। इस पहचान को अक्षुण्ण रखने का गुरुत्तर दायित्व विद्वत परिषद एवं काशी के लोगों पर है। उक्त विचार बिहार के स्वास्थ्य मंत्री अश्विनीकुमार चौबे ने विगत 14 दिसम्बर को वाराणसी स्थित रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान में विद्वानों को सम्मानित करते हुए व्यक्त किए। अखिल भारतीय विद्वत परिषद के सप्तम विद्या सत्र को सम्बोधित करते हुए श्री चौबे ने कहा कि काशी से सदैव क्रान्ति फूटी है। समारोह में डॉ० कमला पाण्डेय की पुस्तक 'धरा कंपते', डॉ० विवेकानंद तिवारी व रिंकी चतुर्वेदी की पुस्तक 'मिदनापुर का स्वातन्त्र्य आन्दोलन' व डॉ० कामेश्वर उपाध्याय की कृति 'सूर्य आराधना' का लोकार्पण किया गया। वैदिक विधि से 98 वर्षीय संत योगीराज सतुआ बाबा का मंच पर अग्र पूजन किया गया। इस दौरान 16 विद्वानों को सम्मानित किया गया, जिनमें प्रो० सुधाकर दीक्षित, प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र, प्रो० बी०के० शुक्ला, प्रो० रामचन्द्र सिंह, डॉ० दीनानाथ सिंह, डॉ० एम० साहू, आचार्य कैलाशचन्द्र दवे, ओ०पी० केजरीवाल, डॉ० राहुल राज, प्रो० मीना सोढ़ी, डॉ० चन्द्रकांता राय, डॉ० ओ०पी० शर्मा, पण्डित नारायण गुरु, प्रो०बी० झा, डॉ० एस०के० अग्रवाल शामिल हैं। डॉ० कमला पाण्डेय, प्रो० राधेश्याम दुबे, डॉ० विनय कुमार सिंह, डॉ० विवेकानंद तिवारी, डॉ० अमर ज्योति सिंह व डॉ० कृष्णदत्त मिश्र को *पाँच-पाँच हजार की पुरस्कार राशि* उनकी सम्मानित पुस्तकों पर दी गई। समारोह में युवा प्रतिभा सम्मान 14 छात्र-छात्राओं को मिला।

पं० गिरिमोहन गुरु सम्मानित

होशंगाबाद, विगत दिवस स्थानीय शिव संकल्प साहित्य परिषद होशंगाबाद के संस्थापक-संचालक नवगीतकार **पं० गिरिमोहन गुरु** को उनकी सद्य प्रकाशित नवगीत संग्रह कृति के लिए जबलपुर की प्रख्यात साहित्यिक संस्था कादम्बिरी ने *दो हजार एक सौ रुपये* भेंट कर 'भूपेन्द्र कौशिक फिक्र' सम्मान से लगभग 30 साहित्यकारों के साथ अंलकृत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष माननीय श्री रोहाणी एवं अध्यक्ष थे साहित्यकार श्री रत्नाकर पाण्डेय।

हेमंत स्मृति कविता सम्मान तथा विजय वर्मा कथा सम्मान

युवा कवि **राकेश रंजन** को उनके कविता संग्रह 'चाँद में अटकी पतंग' के लिए वर्ष 2009 का 'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' तथा चर्चित लेखक **राजू शर्मा** को उनके उपन्यास 'विसर्जन' के लिए वर्ष 2009 का 'विजय वर्मा कथा सम्मान' दिए जाने की घोषणा हेमंत फाउण्डेशन की प्रबन्ध न्यासी कथाकार संतोष श्रीवास्तव तथा सचिव कथाकार प्रमिला वर्मा ने की।

डॉ० मोनिमा चौधुरी 'मनु' को 'ज्वेल ऑफ इण्डिया अवार्ड 2009'

डॉ० मोनिमा चौधुरी 'मनु' को साहित्य सेवा में मिली सफलता और 'पहचान' नामक हिन्दी पुस्तक के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'ज्वेल ऑफ इण्डिया अवार्ड 2009' से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त हुआ। महाराष्ट्र के वर्धा स्थित 'युवा समूह प्रकाशन' ने डॉ० मोनिमा को इस अवार्ड से सम्मानित किया। डॉ० मोनिमा की अंग्रेजी किताब 'इम्प्रेशन' भी अन्तर्राष्ट्रीय 'माईकल मधुसूदन अवार्ड' से सम्मानित हुई है।

रहीम फेलोशिप

आम आदमी उस वक्त भी रहीम की कविताओं में आ गया था। आज के कवियों को इसका श्रेय लेने का हक नहीं है—यह बात पहली रहीम फेलोशिप की घोषणा करते हुए वरिष्ठ कवि अशोक वाजपेयी ने कही। पिछले दिनों इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर के एनेक्स में आयोजित समारोह में कवि **पंकज सिंह** को 'पहला रहीम फेलोशिप' प्रदान किया गया। इसके तहत उन्हें *एक वर्ष तक 25 हजार रुपये प्रतिमाह* दिए जाएँगे। यह फेलोशिप उन्हें भारतीय कविता पर रचनात्मक शोध के लिए दी गई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता नामवर सिंह और संचालन डी०पी० त्रिपाठी ने किया।

यशवन्त को फेलोशिप

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रतिवर्ष दी जाने वाली स्वर्गीय चन्दूलाल चन्द्राकर स्मृति पत्रकारिता फेलोशिप दुर्ग के वरिष्ठ पत्रकार **यशवन्त धोटे** को राज्यपाल ई०एस०एल० नरसिम्हन द्वारा राज्योत्सव की नवीं वर्षगांठ के अवसर पर रायपुर में प्रदान की गई। इसके अन्तर्गत उन्हें *एक लाख रुपए* व *प्रशस्ति पत्र, स्मृतिचिह्न* देकर सम्मानित किया गया। उनके शोध का विषय है—'आदिवासी महिलाओं का सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक अनुशीलन'।

सेतु हैं चौहान

भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित मलयालम के प्रतिष्ठित कवि एम०टी० वासुदेवन ने कालीकट में एक समारोह में हिन्दी साहित्यकार और भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी **उमेश कुमार सिंह** चौहान को सम्मानित किया। चौहान को यह सम्मान वयोवृद्ध-नामचीन मलयाली कवि अक्कितम नंबूदरी की कविताओं के हिन्दी अनुवाद अक्कितम की प्रतिनिधि कविताएँ के लिए दिया गया। इस अवसर पर वासुदेवन ने कहा कि चौहान उत्तर भारत और सुदूर दक्षिण भारत के मध्य एक सेतु हैं और उनका अनुवाद इस दिशा में सशक्त कार्य है।

व्यक्तित्व सम्मान

वाराणसी। साहित्यिक संघ के 17वें वार्षिक अधिवेशन में कई विद्वानों का सम्मान किया गया। अयोध्या भवन में आयोजित समारोह में **कुंवरजी अग्रवाल, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय** व **जवाहर शास्त्री** को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। पण्डित धर्मशील चतुर्वेदी की अध्यक्षता में समारोह आयोजित किया गया।

बाल काव्य संग्रह

हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ने वर्ष 2008-09 की अनुदान योजना के अन्तर्गत जगाधरी, जिला यमुनानगर (हरियाणा) के प्रतिष्ठित कवि/समीक्षक **डॉ० अनिल 'सवेरा'** के बालकाव्य 'उज्ज्वल बने भविष्य हमारा' का अनुदान के लिए चयन किया है।

13 महिलाओं को 'प्रियदर्शनी सम्मान'

21 नवम्बर को केन्द्रीय महिला व बाल विकास राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा तीरथ ने अपने-अपने क्षेत्रों में अहम भूमिका का निर्वाह करनेवाली तथा महिला सशक्तिकरण के लिए कार्यरत तेरह महिलाओं को राष्ट्रीय 'प्रियदर्शनी सम्मान' से सम्मानित किया। महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में आयोजित एक कार्यक्रम में सुश्री तीरथ ने **डॉ० कपिला वात्स्यायन, न्यायमूर्ति लीला सेठ,**

राजनेता मोहसिना किदवई, फिल्म अभिनेत्री सुषमा सेठ, नृत्यांगना उमा शर्मा, समाज सेविका विद्या बेन शाह और सौन्दर्य विशेषज्ञ शहनाज हुसैन समेत तेरह महिलाओं को प्रशस्ति-पत्र देकर और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

'बिरला पुरस्कार' वितरित

23 नवम्बर को एक गरिमामय समारोह में के०के० बिरला फाउंडेशन की ओर से वर्ष 2008 के 'शंकर पुरस्कार', 'वाचस्पति पुरस्कार' और *वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए* दिया जाने वाला 'जी०डी० बिरला पुरस्कार' प्रदान किए गए। 'शंकर पुरस्कार' प्रमुख रंगकर्मी **श्री देवेंद्र राज अंकुर**, 'वाचस्पति पुरस्कार' संस्कृत भाषा के विद्वान् **डॉ० हरिनारायण दीक्षित** तथा वर्ष 2008 तथा 2009 के लिए 'जी०डी० बिरला पुरस्कार' **प्रो० मणीन्द्र अग्रवाल** और **प्रो० राघवन वरदराजन** को प्रदान किए गए। पुरस्कार केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिए। इन पुरस्कारों में फाउंडेशन का *स्मृति-चिह्न, प्रशस्ति-पत्र* तथा प्रत्येक पुरस्कार के अन्तर्गत *डेढ़-डेढ़ लाख रुपए* की धनराशि भेंट की गई। समारोह में के०के० बिरला फाउंडेशन की ओर से श्री शामित भरतिया ने श्री सिंधिया को पुष्प भेंटकर स्वागत किया। समारोह में सर्वश्री वाचस्पति उपाध्याय, आशीष दत्ता, ब्रजमोहन पाण्डे, जे०पी० दास, बिशन टण्डन सहित देश के प्रमुख रचनाकार, वैज्ञानिक व चयन समिति के सदस्य उपस्थित थे।

शैलेय को 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान'

8 नवम्बर को 11 वाँ प्रतिष्ठित 'आचार्य निरंजननाथ सम्मान-2009' युवा कवि **श्री शैलेय** को उनके चर्चित कविता संग्रह 'या' को प्रदान किया गया। श्री शैलेय को सम्मान-स्वरूप *शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिह्न* एवं *इक्कीस हजार रुपए* की नकद धनराशि भेंट की गई।

वित्त मंत्रालय

नई दिल्ली, भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, राजस्व विभाग द्वारा वर्ष 2008-2010 के लिए आयकर, उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क, सेवाकर तथा नारकोटिक्स से सम्बन्धित विषयों पर केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों के कार्यालयों के अधिकारियों / कर्मचारियों एवं आम भारतीय नागरिकों के लिए हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन योजना एवं पुस्तक समीक्षा योजना हेतु पुस्तकें आमन्त्रित की गई हैं। योजनाओं के तहत क्रमश: 25,000 रु० तथा 8,000 रु० तक के दो पुरस्कार दिए जाएँगे। अन्तिम तारीख 30 अप्रैल, 2010 है। विस्तृत जानकारी हेतु राजस्व विभाग की वेबसाइट 'dor.gov.in' देखें।

स्मृति-शेष

'ज्ञान-प्रवाह न्यास' के संस्थापक श्री विनोदकुमार नेवटिया का निधन

संस्कृति अध्ययन एवं शोध केन्द्र ज्ञान-प्रवाह न्यास के संस्थापक, प्रसिद्ध उद्योगपति, समाजसेवी एवं आर०के०बी०के० लिमिटेड के निदेशक **श्री विनोदकुमार नेवटिया** का 1 दिसम्बर 2009, मंगलवार की रात्रि को कोलकाता स्थित उनके आवास पर हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया। वे लगभग 70 वर्ष के थे। अपने पीछे वे अपना भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। सरल हृदय श्री नेवटियाजी के निधन से भारतीय संस्कृति के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है।

संस्कृत के विद्वान् पं० हरिदत्त शास्त्री नहीं रहे

मेरठ। संस्कृत व्याकरण के प्रकाण्ड एवं विश्व प्रसिद्ध विद्वान् **पं० हरिदत्त शर्मा शास्त्री** खामोशी के साथ दुनिया से चले गए। संस्कृत व्याकरण के ज्ञान का पूरे देश में लोहा मनवाने वाले शास्त्रीजी ने समाज को जितना कुछ दिया उसके एवज में समाज और प्रशासन उन्हें कुछ भी देने में नाकाम साबित हुआ। 1972 में राष्ट्रपति पदक से सम्मानित इस विद्वान् की महागाथा जितनी संघर्षपूर्ण है, उतनी ही प्रेरणादायी भी।

जाते-जाते भी दे गए बहुत कुछ—मृत्यु से पूर्व संस्कृत के इस महापण्डित ने अपने अन्तिम क्रिया कर्म में पैसे खर्च करवाने से ज्यादा समाज को देने में भलाई समझी। इसीलिए मौत से पूर्व शहर में स्थित एक मूक बधिर विद्यालय, विवलेश्वर मन्दिर, अन्नपूर्णा अस्पताल, गोपाल गौशाला व अनाथ आश्रम को 11-11 हजार रुपये दान देने का अपने बेटों को आदेश दिया।

स्व० कुसुम चतुर्वेदी का निधन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान की सचिव व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो० मीत चतुर्वेदी की माँ **स्व० कुसुम चतुर्वेदी** का निधन 15 दिसम्बर को हो गया।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की प्रपौत्री व प्रदेश के शिक्षा विभाग में उपनिदेशिका रह चुकी श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी के निधन पर समाजशास्त्र विभाग में शोकसभा कर श्रद्धांजलि दी गई।

प्रो० कुँवरपाल स्मृति-सभा

''कुछ अजब ही और अलग इन्सान था वह,
वो जिया तो अपनी शर्तों पर जिया
कोई समझौता कहाँ उसने किया
ज़िन्दगी के खेल में सच है यही
मौत तू जीती है.... वो हारा नहीं।''

अपने मित्र, हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक और समालोचक, विचारक-चिन्तक और समाज सेवी तथा 'वर्तमान साहित्य' के सम्पादक प्रो० कुँवरपाल सिंह की याद में आयोजित स्मृति-सभा में जब सुप्रसिद्ध शायर शहरयार ने खचाखच भरे हॉल में अपनी नज़्म की ये पंक्तियाँ पढ़ीं, तो सभी की आँखें नम हो आयीं। स्मृति-सभा की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी के प्रख्यात कवि नीरज ने कहा कि वे उनके पुराने मित्र थे। उनका चिन्तन वैज्ञानिक था और अपने चिन्तन, विचार और कर्मों से सदैव हमारे बीच जीवित रहेंगे। उनकी कथाकार पत्नी नमिता सिंह ने कहा कि उनके जीवन में सर्वोपरि स्थान उनके शिष्य-मित्रों का था। दूसरे नम्बर पर पेड़-पौधे, पर्यावरण था और तीसरे नम्बर पर उनका घर-परिवार था। सुप्रसिद्ध इहिासकार प्रो० इरफान हबीब ने कहा कि वे हर प्रकार की साम्प्रदायिक शक्तियों से जूझने वाले अप्रतिम योद्धा थे और बेहद निडर व्यक्ति थे।

स्मृतिसभा में साहित्य-संस्कृति-जनांदोलन से जुड़े लोगों ने डॉ० कुँवरपाल सिंह के आत्मीय-व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

कवयित्री डॉ० रमा सिंह का निधन

10 दिसम्बर को लखनऊ में महादेवी वर्मा और सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य-परम्परा की संवाहक एवं हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री **डॉ० रमा सिंह** का 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। 5 मई, 1927 को जनमी डॉ० रमा सिंह स्वतन्त्रता सेनानी थीं।

पत्रकार शारदा पाठक नहीं रहे

21 नवम्बर को जाने-माने पत्रकार **श्री शारदा पाठक** का जबलपुर के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 76 साल के थे और अविवाहित थे। पुरातत्त्व में एम०ए० शारदाजी पिछले 55 साल से पत्रकारिता से जुड़े हुए थे। उन्होंने 1954 में नवभारत से पत्रकारिता की शुरुआत की, कुछ समय हिन्दुस्तान में भी काम किया। 1972 में महर्षि महेश योगी के संस्थान से जुड़े। अभी वे स्वतन्त्र पत्रकारिता कर रहे थे।

कवि-लेखक दिलीप चित्रे नहीं रहे

10 दिसम्बर को मराठी भाषा के कवि, लेखक, आलोचक और फिल्म निर्माता **श्री दिलीप चित्रे** का कैंसर से निधन हो गया। चित्रे चित्रकारी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए भी जाने जाते थे। 71 साल के चित्रे के परिवार में केवल उनकी पत्नी हैं। उनके इकलौते बेटे का भोपाल गैस त्रासदी में निधन हो गया था। 'मार्फियस' उपन्यास के लेखक श्री चित्रे युवा लेखकों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहे। बड़ौदा में 1938 में जनमे श्री चित्रे अपने परिवार के साथ मुंबई आ गए थे, जहाँ उनकी कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ।

भारतीय वाङ्मय परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'शुकदेव में था कबीर-सा अक्खड़पन'

वाराणसी। **लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार** ने कहा कि स्व० शुकदेव सिंह में कबीर जैसा अक्खड़पन झलकता था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित केएन उडुपा सभागार में 30 दिसम्बर को **विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित** 'सबद शिल्पी : डॉ० शुकदेव सिंह' शीर्षक पुस्तक का विमोचन करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि स्व० शुकदेव सिंह का व्यक्तित्व विद्वता व वैचारिकता का समावेश था। उनकी सबसे बड़ी खासियत थी कि वे बहुत विनम्र थे। स्व० शुकदेव ने संत कबीर, कीनाराम, गोरखनाथ पर सराहनीय काम किया।

उन्होंने कहा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आना मेरे लिए भावनात्मक यात्रा बन जाती है। जब भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आती हूँ तो नई शक्ति और ऊर्जा का संचार होता है। मन में बहुत सी यादें उमड़ आती हैं। बाबूजी (जगजीवनराम) ने यहाँ से पढ़ाई की और उनकी जो सोच बनी मुझे दे गए। इसलिए मैं यहाँ से जुड़ाव महसूस करती हूँ। बाबूजी की संत साहित्य में रुचि थी। इसी नाते डॉ० शुकदेव सिंह से उनका सम्बन्ध बना। गंगा तट पर रविदास मन्दिर का निर्माण कराया तो उनके सम्पादित पदों को जगह दी। रविदास अकादमी की जिम्मेदारी सौंपी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने की। स्वागत रेक्टर प्रो० बी०डी० सिंह ने किया व स्व० शुकदेव सिंह की पुत्री डॉ० प्रज्ञा परमिता ने पुस्तक के बारे में बताया। धन्यवाद ज्ञापन चिकित्सा विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो० टी०एम० मोहापात्रा ने किया। *स्व० शुकदेव सिंह की पत्नी* **पुस्तक की सम्पादिका भगवंती देवी** ने अतिथियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर **पुस्तक के प्रबन्ध सम्पादक संत विवेकदास,** रजिस्ट्रार डॉ० के०पी० उपाध्याय आदि अनेकानेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

युगपुरुष थे पं० विद्यानिवास

वाराणसी। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वी० कुटुम्ब शास्त्री ने कहा है कि पं० विद्यानिवास मिश्र युगपुरुष थे। वे असाधारण प्रतिभा के धनी थे। इसलिए ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में उनका समान अधिकार था। प्रो० शास्त्री 29 दिसम्बर को विद्यानिवास मिश्र की स्मृति में आयोजित चतुर्थ व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। व्याख्यानमाला का विषय था— 'संस्कृत भाषा की विशेषता'। प्रो० शास्त्री ने कहा कि संस्कृत भाषा को विश्व की सर्वप्राचीन भाषा होने का गौरव प्राप्त है। आज संसार में कोई भी ग्रन्थ ऋग्वेद से प्राचीन नहीं है। इस तथ्य को भारतीय ही नहीं, अपितु विश्व के समस्त विद्वान् स्वीकारते हैं। वस्तुत: संस्कृत साधना की भाषा है, जो व्यक्ति साधनायुक्त नहीं होता उसे संस्कृत का रहस्य समझ में नहीं आता। व्याख्यान के प्रथम सत्र के अध्यक्ष प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने कहा कि प्राचीन काल में संस्कृत ने राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधा था। दूसरे सत्र के अध्यक्ष प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी ने कहा कि आधुनिकता की चकाचौंध में हम संस्कृत को भूलते जा रहे हैं। इसकी सुरक्षा के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है।

हिन्दी चिट्ठाकारी की दुनिया ब्लॉग लोकतंत्र का पाँचवाँ स्तम्भ : नामवर सिंह

वो अति उत्साह में हैं। उनका आत्मविश्वास उनकी चमकती आँखों से झाँकता है। कुछ नया कर गुजरने का विजयी भाव उनकी चाल से छलकता है। नई जमीन तोड़ने का गौरवबोध उनकी वाणी से झरता दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में वे अपनी गोड़ी हुई जमीन का वास्तविक मूल्य आँकने जुटे हैं अपनी मेहनत से नई जमीन में उगाई फसल की गुणवत्ता का जायजा लेने पहुँचे हैं। परती खेत में छाई हुमकभरी हरियाली का सच जानने को उत्सुक हैं। अपने उत्पाद की व्यापक स्वीकृति की तलाश है उन्हें।

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी एकेडेमी के संयुक्त आयोजन 'हिन्दी चिट्ठाकारी की दुनिया' के पहले दिन शहर के तमाम लेखकों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों की उपस्थिति में प्रो० नामवर सिंह एवं कुलपति विभूतिनारायण राय ने हिन्दी चिट्ठाकारों के हौसले की दाद दी। उनकी उपस्थिति को चिह्नित किया, साथ ही उन्हें अपनी हद पहचानने की नसीहत भी दी और यह आत्मनियन्त्रण से ही सम्भव है। सूचनाओं को निर्बाध पोस्ट करने से लेकर अबाधित स्वतन्त्रता पाते रहने के लिए आत्म नियन्त्रण जरूरी है।

साहित्य की मुख्यधारा से जुड़े लेखक कवि भले हिन्दी ब्लॉगिंग को हेय दृष्टि से देखते हों लेकिन इस दो दिवसीय सम्मेलन के चार सत्रों में 'हिन्दी : ब्लॉग विचार अभिव्यक्ति का नया माध्यम', 'अन्तर्जाल पर हिन्दी भाषा और साहित्य' एवं 'ब्लॉग का तकनीकी पक्ष' पर हुई तर्कपूर्ण बहस द्वारा इस खाई को पाटने का काम अवश्य हुआ। देश के विभिन्न हिस्सों से आये लगभग पैंतीस ब्लॉगरों के अलावा स्थानीय ब्लॉगरों एवं साहित्य प्रेमियों की सक्रिय भागीदारी से ब्लॉग के माध्यम को अधिक लोकप्रिय बनाने और उसे पारस्परिक साहित्य जगत से जोड़ने में मदद मिली।

'हिन्द स्वराज' और सभ्यता विमर्श

गाँधी की सभ्यता आत्मा को जोड़ने की सभ्यता है। मनुष्यता की सभ्यता है। जिसका मूलमन्त्र संयम है। आज हम वाणिज्यमूलक संस्कृति में जी रहे हैं, अभी भी समय है कि सभ्यता को अपना मालिक न बनने दें। उक्त विचार गाँधीवादी चिन्तक डॉ० सुचेत गोइन्दी ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा आयोजित 'हिन्द स्वराज और सभ्यता विमर्श' विषयक गोष्ठी में व्यक्त किए। आधुनिक युवा को परिभाषित करते हुए व्यंगात्मक अन्दाज में उन्होंने कहा कि कौन से युवा के पास गाँधी को पहुँचाया जाए? मैकाले का युवा नकारात्मकता की भावना से प्रेरित है, वह मानवीय सभ्यता को नकारता है। गाँधी की सोच मनुष्यता के लिए थी। हम जिस बिन्दु पर आज खड़े हैं, वहाँ गैर बराबरी और बेरोजगारी मुँह बाए खड़ी है। जब मनुष्य ही नहीं रहेगा तो विकास किसके लिए होगा। श्री राकेश ने कहा कि गाँधी अपनी पूर्ववर्ती पीढ़ी से संवाद स्थापित करते हुए भविष्य की पीढ़ी को सम्बोधित करते हैं। हमें बाजार आधारित राष्ट्र के प्रतिरोध की शक्ति सीमान्त समाजों और गाँधी के बताये रास्तों से ही प्राप्त होगी। राकेश मिश्र ने कहा कि गाँधी की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' आज इसलिए पढ़ी जानी चाहिए क्योंकि बाजार आधारित सभ्यता ने आमजन से उसका विवेक छीन लिया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो० जे०एस० माथुर ने कहा कि गाँधी की अर्थव्यवस्था जरूरत पर जोर देती है न कि माँग पर। आजादी के साठ साल में हम गाँधी को भूल गये हैं। संचालन कार्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक संतोष भदौरिया ने किया।

साहित्य में वियोग शृंगार पर विद्वत् गोष्ठी

चेन्नई की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था साहित्यानुशीलन समिति की ओर से भारतीय साहित्य में विप्रलम्भ शृंगार विषय पर अनुशीलन-समावेश का आयोजन किया गया। विद्वत् गोष्ठी की अध्यक्षता तमिल और हिन्दी के जाने-माने आलोचक, अनुवादक एवं पत्रकार डॉ० र० शौरिराजन ने की। समिति के अध्यक्ष डॉ० इंदरराज बैद ने भारतीय रचनाकारों के विरह-वर्णन की मार्मिकता एवं अद्वितीयता पर प्रकाश डाला। संस्कृत के महाकवि कालिदास के मेघदूत पर डॉ० एस० सुब्रह्मण्यन विष्णुप्रिया ने, तमिल कवयित्री आण्डाल कृत नाच्चियार तिरूमोळि पर डॉ० एन० लक्ष्मी अय्यर ने, मीराबाई की पदावली पर डॉ० चुन्नीलाल शर्मा ने, मैथिल कोकिल विद्यापति की पदावली पर डॉ० निर्मला मौर्य ने, बिहारी-सतसई पर डॉ० विद्याशर्मा ने और मलिक मुहम्मद जायसी के पद्मावत काव्य पर डॉ० अशोक कुमार द्विवेदी ने अपने-अपने अनुशीलन आलेख प्रस्तुत किये। हिन्दी अधिकारी डॉ० पी०आर० वासुदेवन ने भारतीय साहित्य में सौन्दर्य की अवधारणा पर अपना चिन्तनपूर्ण आलेख प्रस्तुत किया।

हिन्दी विश्वविद्यालय का दूसरा दीक्षांत समारोह

वर्धा (महाराष्ट्र) स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० विभूतिनारायण राय ने इस अवसर पर मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ को डी-लिट्० की मानद उपाधि से विभूषित किया।

इस गरिमामय दीक्षांत समारोह के दौरान मॉरीशस के राष्ट्रपति सर अनिरुद्ध जगन्नाथ बतौर विशिष्ट अतिथि, यूजीसी के अध्यक्ष प्रो० सुखदेव थोरात मुख्य अतिथि एवं समारोह के अध्यक्ष थे। विश्वविद्यालय कुलाधिपति और हिन्दी के प्रख्यात साहित्य समालोचक प्रो० नामवर सिंह ने समारोह के दौरान विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के 31 विद्यार्थियों को स्वर्ण, 42 को रजत, 30 को कांस्य पदक से सम्मानित किया। साथ ही, पी-एच०डी०, एम०फिल०, डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों के 246 विद्यार्थियों को डिग्री व प्रमाण पत्र दिये गये। भाषा विद्यापीठ के पी०वी० जगमोहन को पी-एच०डी० की डिग्री प्रदान की गई।

समाज से दूर होता साहित्य चिन्ताजनक

हिन्दी साहित्य की मुख्यधाराओं कहानी व कविता में काफी कुछ निराशा जैसी स्थिति है। सत्तर के दशक में कहानीकारों ने जनसमस्याएँ उठाने का प्रयास किया लेकिन वर्तमान में समाज को साहित्य से दूर करने की कोशिश हो रही है, जो चिन्ताजनक है। यह बात महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति विभूतिनारायण राय ने पिछले दिनों महादेवी वर्मा सृजन पीठ, कुमाऊँ विश्वविद्यालय रामगढ़ (नैनीताल) द्वारा 'हिन्दी कहानी और कविता का समकालीन परिदृश्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कही।

महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो० बटरोही ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में कहा कि विगत कुछ वर्षों से यह अनुभव किया जा रहा है कि लेखन समाज के मुख्य सरोकारों में से गायब होता चला गया है।

कहानी सत्र की शुरुआत करते हुए कथाकार योगेन्द्र आहूजा ने कहा कि दुनिया हर दिन करवट ले रही है लेकिन गरीबी व अन्याय का सिलसिला नहीं रुका है। आज कहानियों का परिदृश्य उत्तेजक है। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए 'तद्भव' के सम्पादक अखिलेश ने कहा कि कहानी समाज के बदलने से बदली। आज के कहानीकार को इस बदले समाज को अभिव्यक्त करने के लिए यथार्थवाद का अतिक्रमण करना होगा। उन्होंने कहा कि बड़े आख्यान बड़े दु:स्वप्न के समय रचे जाते हैं।

सत्र का संचालन करते हुए कथाकार महेश कटारे ने कहा कि कहानी का काम मनुष्य की धड़कनों को आकार देने का है। दिनेश कर्नाटक ने कहा कि समय की जटिलता के नाम पर आज कहानियों के साथ बेवजह के प्रयोग कर कहानी को जटिल बना दिया गया है। महान कहानियों ने हमेशा सादगी से अपनी बात कही है। नवीन कुमार नैथानी ने कहा कि आज की कहानी में वैचारिकता का संकट दूर तक दिखाई देता है। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया ने कहा कि कहानी के क्षेत्र में आलोचकों ने निराश और दिग्भ्रमित किया है। कृति के अन्दर विकृति नहीं आनी चाहिए। कहानी और कविताएँ धीरे-धीरे अपना काम करती हैं। रचना आज आलोचना से आगे चली गयी है।

कविता सत्र की शुरुआत करते हुए अपने आरम्भिक वक्तव्य में विजय गौड़ ने कहा कि विधाएँ अपना अतिक्रमण करती हैं। समकालीन कविताओं पर बात करने के लिए समकालीन कहानियों पर बात होनी चाहिए। पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि नए कवि में आत्मविश्वास तथा आत्मालोचना की कमी है। वीरेन डंगवाल ने कहा कि ऐसा लगता है कि आज की कविता अनुवाद की सुविधा के लिए लिखी जा रही है। कविता को अपने समाज की ध्वनियों तथा शब्दों को व्यक्त करना चाहिए।

सत्र का संचालन करते हुए सिद्धेश्वर सिंह ने कहा कि एक समय कविता की समाज में इतनी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी कि कविता पोस्टर के रूप में सामने आती थी, जबकि आज कविता उस तरह से अपना प्रभाव नहीं छोड़ पा रही है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 'हिन्दी रचनाशीलता और नए समाज की चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित तीसरे सत्र के आरम्भिक वक्तव्य में अरुणेश नीरन शुक्ल ने कहा कि साहित्य में सक्रिय नई पीढ़ी कुछ बेहतर खोजे। रचनाकार शोषण के खिलाफ प्रतिरोध की चेतना का निर्माण करें। भारत भारद्वाज ने कहा कि आज हम साठ वर्षों बाद आजादी पर पुनर्विचार कर रहे हैं। सूरज पालीवाल ने कहा कि यह कहना उचित नहीं कि साहित्यकार सपने नहीं देख रहा है। प्रेमचंद बड़े समाज का सपना देखते थे। क्या हमारे लेखक प्रेमचंद की तरह खतरे उठाने को तैयार हैं।

सत्र का संचालन करते हुए कथाकार देवेन्द्र ने साहित्य तथा समाज के द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध को रेखांकित किया।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में 'नया ज्ञानोदय' के सम्पादक रवीन्द्र कालिया ने कहा कि यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि हिन्दी में पाठक नहीं हैं।

नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती का लोकार्पण

भारत में नवजागरण के पुरोधा तथा प्रमुख सूत्रधार स्वामी दयानन्द के जीवन एवं कृतित्व का विस्तृत विश्लेषण करने वाले ग्रन्थ 'नवजागरण के पुरोधा' का लोकार्पण कर्नाटक के भूतपूर्व राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने राजस्थान के हिन्डौन नगर में किया।

दयानन्द साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय द्वारा दो खण्डों में रचित यह ग्रन्थ भारतीय नवोत्थान के ज्वलन्त नक्षत्र की जीवन गाथा को साहित्यिक शैली में प्रस्तुत करता है। 1000 पृष्ठों के इस ग्रन्थ में दुर्लभ सामग्री तथा अनेक ऐतिहासिक चित्र दिये गये हैं।

'जब तक मनुष्य है, कविता रहेगी'

वाराणसी, प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह का कहना है कि कविता के भविष्य को लेकर चिन्तित होने की खास जरूरत नहीं है। जब तक पृथ्वी पर मनुष्य रहेगा तब तक कविता का अस्तित्व बना रहेगा। जब तक अंधेरा रहेगा तब तक कविता रहेगी। महान कविताएँ अँधेरे के दौर में ही लिखी गईं। हमें अपनी भाषा और जबान को जिन्दा रखना है। आम जनता को वाणी देने की जरूरत है। यह काम कविता ही कर सकती है। वे यूपी कॉलेज में 'कविता का भविष्य' विषय पर आयोजित गोष्ठी में बोल रहे थे। गोष्ठी प्रगतिशील लेखक संघ तथा यूपी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित थी।

प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि मीर और गालिब जैसे कवि मुगल सत्ता के अवसान काल की देन हैं।

गोष्ठी के मुख्य वक्ता जाने माने कवि अरुण कमल ने कहा कि कविता की जरूरत आज तो है ही भविष्य में भी रहेगी। क्योंकि कविता हमारे मन की बात कहती है। कविता उन चीजों के बारे में भी कह सकती है जिनके बारे में अन्य माध्यम नहीं कह सकते। कविता हमें चीजों को सही अर्थों में देखना सिखाती है। वह मनुष्य की चिन्ता करती है। इसलिए वह जनवादी परम्परा के लिए संघर्ष करने वालों के लिए वरदान है। इस अवसर पर प्रो० कुमार पंकज, प्रो० चौथीराम यादव, प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० बलराज पाण्डेय, डॉ० श्रद्धानंद आदि अनेक विद्वान उपस्थित थे।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 'व्याख्यानमाला' के चतुर्थ पुष्प का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में 'राजभाषा हिन्दी विशिष्ट व्याख्यानमाला' के चतुर्थ पुष्प में अपने विचार व्यक्त करते हुए विशिष्ट अतिथि डॉ० राष्ट्रबंधु ने लोगों का आह्वान किया कि वे इस भावना का विसर्जन कर दें कि अंग्रेजी ही विज्ञान की भाषा हो सकती है। डॉ० राष्ट्रबंधु ने विज्ञान की लोकप्रियता के लिए बच्चों को हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया। आपका विचार था कि चूँकि भाषा संस्कृति को साथ लेकर चलती है इसलिए विज्ञान की शिक्षा हिन्दी में देने से संस्कारों की भी रक्षा होगी।

समारोह के अध्यक्ष, प्रख्यात प्रयोगवादी कवि पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी, देहरादून ने भाषा

और संस्कृति के सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्कृति बुनियादी आंतरिक विश्वासों का नाम है जिनसे भाषा जीती है।

समारोह का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि हिन्दी एक प्राणवान भाषा है। जो भाषा लोक की सम्पत्ति हो जाती है उसे फिर कोई नहीं मार सकता।

'अपनी भाषा' की राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा स्थापना तथा उनमें परस्पर सौहार्द्र कायम करने हेतु समर्पित संस्था 'अपनी भाषा' द्वारा दिनांक 14-15 नवम्बर, 2009 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भारतीय भाषा परिषद के साथ संयुक्त रूप से आयोजित यह संगोष्ठी कोलकाता स्थित परिषद के सभागार में सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का विषय था 'उभरती अस्मिताएँ एवं हिन्दी भाषा'।

संगोष्ठी का उद्घाटन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रधानमंत्री प्रो० अनंतराम त्रिपाठी ने किया। 'अपनी भाषा' संस्था के महासचिव प्रो० अमरनाथ ने अपने बीजभाषण में अस्मिता की राजनीति के निहितार्थों को स्पष्ट करते हुए इसे जातीय विखण्डन का उत्प्रेरक बतलाया।

सत्र के प्रधान वक्ता श्री विवेककुमार सिंह ने राष्ट्रीय ज्ञान आयोग और शिक्षा माध्यम का प्रश्न उठाया। उनका विचार था कि भाषा का प्रश्न जनता नहीं उठा रही है, बल्कि स्वार्थी नेता विखण्डनवादी शक्तियों के शह पर उठा रहे हैं।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रख्यात ललित निबन्धकार डॉ० कृष्णबिहारी मिश्र ने कहा कि भाषा की अस्मिता का खतरे में पड़ना किसी देश की अस्मिता पर मंडराते खतरे का सूचक है। इस अवसर पर 'भाषा विमर्श' के नए अंक का लोकार्पण डॉ० मिश्र द्वारा किया गया।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र का विषय था 'अस्मिताओं के उभार की राजनीति और उनकी नेतृत्वकारी शक्तियाँ'। इस विषय पर बोलते हुए हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के डॉ० आलोक पाण्डेय ने भाषा के सवाल को पूँजी और मल्टीनेशनल से जोड़ा। उन्होंने अस्मिताओं को उभारने तथा जातीय जीवन की विच्छिन्नता के पीछे सक्रिय पूँजी के खेल को रेखांकित किया। कार्पोरेट पूँजीवाद मनुष्य को एकाकी करता है और उसकी सामुदायिक प्रतिरोध चेतना को कुंद कर देता है। उपभोक्तावाद मनुष्य को संवेदनहीन बनाता है। संवेदनहीन लोगों में जातीय अस्मिता और गौरवबोध नहीं होता। उन्होंने कहा कि कई संस्थान विखण्डनवादी चेतना का पोषण करने के लिए वित्त और वैचारिकी उपलब्ध कवा रहे हैं।

डॉ० शम्भुनाथ ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हिन्दी क्षेत्र में वैविध्य अधिक है एवं सामंती अवशेष भी विद्यमान हैं। दूसरे सत्र का विषय था 'अस्मिताओं की राजनीति और जातीय विखण्डन'। डॉ० ऋषिकेश राय ने जातीय निर्माण की प्रक्रिया की व्याख्या करते हुए जातीय भाषा के गठन तथा प्रसार की चर्चा की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संस्था के महासचिव प्रो० अमरनाथ ने कहा कि हिन्दी भारत की सम्पर्क भाषा है। यह एक भाषा व्यवस्था भी है, जिसका अंग इसकी बोलियाँ हैं। ये सभी साझा जातीय जीवन का निर्माण करती हैं। हिन्दी की बोलियों को इससे अलगाना, अंग्रेजी को प्रकारान्तर से स्थापित करना है। उन्होंने बोलियों और हिन्दी के बीच सार्थक और जीवन्त सम्बन्धों की वकालत की।

सच की तलाश ही साहित्य लिखना है

''जब तक सच की तलाश जारी रहेगी तब तक साहित्य लिखा जाता रहेगा'' उक्त विचार प्रख्यात आलोचक और चिन्तक श्री देवेन्द्र इस्सर ने हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजित संगोष्ठी 'साहित्य क्यों?' पर अपने अध्यक्षीय भाषण में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सच पारे की तरह होता है जो लगता तो है पकड़ में आ रहा है। लेकिन पकड़ में आता नहीं। उन्होंने अपने समय को याद करते हुए कहा कि हम साहित्य से दुनिया बदलने का सपना देखते थे... लेकिन हम बदल गए, दुनिया नहीं बदली।

साहित्य अकादमी के सचिव और प्रसद्धि कन्नड़ लेखक श्री अग्रहार कृष्णमूर्ति ने कहा कि अच्छा साहित्य वही है जो विभिन्न कालखण्डों में भी अपनी बात उसी सच्चाई से कह सके।

पंजाबी अकादमी के सचिव डॉ० रवेल सिंह ने साहित्य को ऐसा उपकरण बताया जिसके जरिए वह एक ऐसी अनदेखी दुनिया की सैर कर सकते हैं जिसका लेखा-जोखा साहित्यकार ने काफी श्रम से तैयार किया होता है।

उर्दू अकादमी के सचिव श्री मरगूब हैदर आबिदी ने कहा कि आज की मशीनी दुनिया में हम साहित्य कम लिख रहे हैं और उसको पढ़ने वाले भी कम हो रहे हैं, लेकिन साहित्य समाज की प्रगति के लिए जरूरी है। जंग और नफरत को रोकने का काम साहित्य ही कर सकता है।

इससे पहले हिन्दी अकादमी के उपाध्यक्ष प्रो० अशोक चक्रधर ने कहा कि लिखने के बाद साहित्य लेखक का नहीं रहता बल्कि वह एक ताकत के रूप में पाठक के पास चला जाता है।

महीप सिंह के सद्य प्रकाशित उपन्यास 'बीच की धूप' का लोकार्पण

दिल्ली की साहित्यिक संस्था संवाद के तत्वावधान में डॉ० महीप सिंह के उपन्यास 'बीच की धूप' का लोकार्पण करते हुए डॉ० नरेन्द्र मोहन ने कहा, ''इस उपन्यास में महीप सिंह ने पात्रों के तनावों का एक बहुत बड़ा फलक सामने रखा है और बेचैन करने वाले बहुत-से प्रश्न उठाये हैं।''

आलोचक डॉ० हरदयाल ने इसे एक काल विशेष को बाँधने वाला उपन्यास मानते हुए कहा कि इसमें सन् 1975 से 90 तक के समय को समेटा गया है। समय के लगभग सभी प्रश्नों पर लेखक की दृष्टि गई है।

अपने लेखकीय वक्तव्य में महीप सिंह ने कहा कि 'बीच की धूप' में तत्कालीन राजनीति का चित्रण अवश्य है लेकिन वह वाहन है, गंतव्य नहीं। गंतव्य तो मनुष्य का मन है जिसकी व्यथा राजनीति ने कितनी बढ़ा दी है और मानवीय सम्बन्धों में कितनी जटिलता उत्पन्न कर दी है। मेरा उद्देश्य इस उपन्यास में ऐसे मानवीय सरोकारों को व्यक्त करना रहा है।

'गाँधी को फांसी दो' की महत्त्वपूर्ण प्रस्तुति

रूपान्तर नाट्यमंच, गोरखपुर ने कचहरी क्लब, टाउनहाल में 'गाँधी गिरमिटिया' के प्रख्यात लेखक गिरिराज किशोर के नये नाटक 'गाँधी को फांसी दो' का प्रसिद्ध रंगकर्मी और नाट्य समीक्षक डॉ० गिरीश रस्तोगी के निर्देशन में बेहद प्रभावी मंचन किया।

पहला बाल साहित्य सम्मेलन

मुम्बई के ठाणे में बच्चों में छिपी प्रतिभा को सामने लाने के लिए विश्व में अपनी तरह का पहला बाल साहित्य सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अनोखे सम्मेलन में राज्य-भर से आए हजारों बच्चों ने अपनी रचनाएँ पेश कीं। सम्मेलन की आयोजक संस्था न्यायिक लढा ने बताया कि राज्य में मराठी साहित्य सम्मेलन और दलित साहित्य सम्मेलन जैसे आयोजन तो अवश्य हुए हैं लेकिन केवल बच्चों के लिए यह सम्मेलन पहली बार किया गया, जो अत्यन्त उत्साहवर्धक रहा।

भगवतीशरण मिश्र के दो उपन्यास

दिल्ली के मयूर विहार में 'नया' त्रैमासिक पत्रिका द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भगवतीशरण मिश्र के सद्यः प्रकाशित दो पौराणिक औपन्यासिक कृतियों 'गुहावासिनी' एवं 'हंसवाहिनी' का लोकार्पण करते हुए डॉ० मधुकर गंगाधर ने कहा कि ऐतिहासिक एवं पौराणिक औपन्यासिक लेखन के क्षेत्र में डॉ० मिश्र का विशिष्ट स्थान है।

'मेरे मेंहदी हसन'

नई दिल्ली में राजेन्द्र भवन के सभागार में राजेन्द्र प्रसाद अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अखिलेश झा द्वारा गजल के शहंशाह मेंहदी हसन पर लिखी पुस्तक 'मेरे मेंहदी हसन' का विमोचन योजना आयोग की सदस्य डॉ० सईदा हमीन ने किया। लेखक ने इस पुस्तक में मेंहदी हसन के जीवन और उनकी संगीत-यात्रा के सभी पहलुओं को छुआ है। समारोह में मेंहदी हसन के परिवार के साथ भारत और पाकिस्तान के कई कलाकारों ने मेंहदी हसन की गाई गजलों और गीतों को प्रस्तुत किया।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

मैक्समूलर द्वारा वेदों का विकृतिकरण : क्या, क्यों और कैसे, डॉ० के०वी० लाल, प्रकाशक : हिन्दू राइटर्स फोरम, 129 बी, डी०डी०ए० फ्लैट्स (एम०आई०जी), राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027, प्रथम संस्करण, मूल्य : 40/–रु०मात्र

× × × वैदिक संहिताओं के अध्येता मैक्समूलर के ईसाई-दृष्टिकोण एवं पाश्चात्य-पूर्वाग्रहों की समीक्षा है प्रस्तुत ग्रन्थ। लेखक ने मैक्समूलर की वेद-विद्या के प्रति निष्ठा का संकेत करते हुए उनकी सीमाओं का रेखांकन भी किया है जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे दृष्टि-विशेष के पूर्वाग्रह से ग्रस्त थे, अतः उन्होंने जानबूझकर वैदिक-भाष्यों के भारतीय अर्थ-सन्दर्भों की उपेक्षा की है। पुस्तक-लेखक ने अपने कथन के सोदाहरण साक्ष्य भी प्रस्तुत किये हैं।

हिन्दी सेवी संस्था कोश, वीरेन्द्र परमार, प्रकाशक : लेखक स्वयं, 1091/टाईप-5, एन-एच IV, फरीदाबाद-121001, प्रथम संस्करण, मूल्य : 200/–रु० मात्र

× × × शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, पत्रकारिता आदि विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी को सर्व-स्वीकार्य बनाने में हिन्दी सेवी संस्थानों का महनीय योगदान है। नागरी लिपि और हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिये कार्यरत लगभग 103 संस्थानों का प्रामाणिक विवरण देते हुए लेखक ने संस्थाओं के कार्य-कलाप और उपलब्धियों का भी संधान किया है। हिन्दी सेवी संस्थानों का यह एकत्र परिचय सूचनापरक संग्रह भी बन सका है।

बण्टा, डॉ० अमरेन्द्र, प्रकाशक : अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार) प्रथम संस्करण, मूल्य : 75/- रु०

× × × अंगिका बोली के परिचित साहित्यकार डॉ० अमरेन्द्र का नवीनतम बाल-उपन्यास है 'बण्टा'। हिन्दी की क्षेत्रीय बोलियों की तरह ही 'अंगिका' में लिखा गया यह उपन्यास क्षेत्र-विशेष के किशोरों के उद्‌बोधन और मनोरंजन के साथ उनमें साहित्य-चेतना जगाने के लिये भी उपादेय है।

मुक्ति और चेतना, यदुनाथ सेउटा, प्रकाशक : सदीनामा प्रकाशन, एच-5 गवर्नमेण्ट क्वार्टर्स, बजबज, कोलकाता-700137, प्रथम संस्करण, मूल्य : 70/–रु० मात्र

× × × भारतीय साहित्य के परिदृश्य में 'दलित साहित्य' का उभार सारे वाद-विवाद से परे हमारे समाज के ही वंचित, शोषित, दलित वर्ग की आत्मानुभूति से जन्मा आलेख है। यह साहित्य जातिविहीन, वर्गविहीन मानवता की वकालत करते हुए सतत संघर्ष की अभिव्यक्ति है। इस संग्रह की कविताएँ दलित-वर्ग की मुक्ति को स्वर देने का सार्थक प्रयास है। × × तुम्हारे आने के बाद से / हम भूखे, नंगे सो रहे हैं / आज जुटा रहे हैं / पानी और रोटी / तुम तो, पानी, रोटी, विद्या पर / गेंडुरी मारे बैठे थे।

भोर की ओर, बाबू रामसिंह 'कवि', प्रकाशक : शिव संकल्प साहित्य परिषद्, नर्मदापुरम, कार्या० श्री सेवाश्रम नर्मदा मंदिरम् आवासीय मण्डल उप निवेशिका, होशंगाबाद, प्रथम संस्करण, मूल्य : 20/–रु० मात्र

× × × भक्तिपरक आध्यात्मिक-मानसिकता, तत्ववाद, नैतिकता, आदर्श आदि परम्परित जीवन-मूल्यों में आस्था रखने वाले कवि बाबू रामसिंह द्वारा रचित लगभग 300 दोहों का संकलन है 'भोर की ओर'। × × ''घातक चिन्ता से चिता, करे भस्म जीवंत। चिन्ता तज आगे बढ़ो, यही सलोना पंथ॥''

टोपियाँ, ओम रायज़ादा, प्रकाशक : ऋचा प्रकाशन, सावरकर वार्ड, कटनी (मध्य प्रदेश), प्रथम संस्करण, मूल्य : 50/–रु० मात्र

× × × स्व० दुष्यन्तकुमार की गज़ल-रचनाओं के बाद से हिन्दी में गज़ल लिखने का चलन बढ़ा है। हिन्दी-उर्दू भाषा की सीमा लाँघकर आम बोलचाल की भाषा में अपनी बात सम्प्रेषित करने की कोशिश में पिछले दिनों जिन गज़लकारों ने मुकाम हासिल किया है उन्हीं में एक प्रमुख नाम है ओम रायज़ादा। उनके इस संग्रह की गज़लें आम-आदमी की व्यथा-कथा के साथ उसकी आकांक्षाओं की प्रतिध्वनि हैं। × × ''यह कोशिश करना है इक शम्मा तो जल जाये / अँधियारा उजालों में धीरे से बदल जाये।''

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 **जनवरी 2010** **अंक : 1**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi.: (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax: (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)